

DPN 5812

Title: श्रीकृष्ण पूजा विधि व मेमेगु पूजा *SRI KRṢṢṢṢṢṢ PŪJĀ VLDHI VA MEMEGU PŪJĀ*

Run. No. 6503

Cat. No.

Micro. No.

Subject धार्मिक किर्ति / *Religious ritual*

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / *नेपालभाषा विधि कि*

Size in cms. 23 x 10

Folios 12

Lines (in a page) 8/9

newa direction

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 867, 763, 901

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.:

Material: palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

↓
ॐ नमः श्रीकृष्णाय ॥ ॥ श्रीकृष्ण पूजा विधि लिख्यते ॥

0 cms.

5

10

15

20

ક્ર. નંબર / સહી

1. सावन ८६७ माघ शुद्ध पूर्णिमा श्री श्रीपाल देवजुया, गुह्या परिपाति ॥

2. वक्षः गोपाल

સેવા ૭૬૩ મિત્ર ડાહ્યાદ શુભ પચ્ચમિ શ્વશુદ્ધ સ્ત્રીવૈધનાથ પાત્નિ જોગીતિ (ક્રિ)
 સ્ત્રીનાથ. શ્વ ૩ સ્વમહાસયા નામન સ્ત્રીનાથગુને સ્ત્રી — સેવગુચાત્ર પાસાદ
 સેવકાવ સ્થાપના ચાહ્વાવ. ગુરુત્રિયાવ ત્રિગુ ... (અમૃત: ૬)
 સે ૭૬૩ શ્વ શુભિસુ

ਦੀ ਇਹ ਪ੍ਰਤੀ ਸਮਾਪਤ ॥ ੪੦੭ ॥ ਭੁਕੇ ੨

२ धनेश्वर म.
देवमागूठमा.
कु. शिव ३ धंदोर
ध्व. धंदोर लवुका
कल. लोमिया
म. हराश्रुधोपा

लक्ष्मीनारायण ईदु चण्डीका पूजा ॥

लकार मो. लया —

लकार २॥ —

२॥ =



लक्ष्मीनारायण ईद्व चण्डी का पूजा ॥

लकार मो ह्य ॥ —

लकार २॥ —

२॥ = ३

स्तोत्र ६ राधा कृष्ण गरुड
 १. ॐ नमः श्री कृष्णाय ॥ ॥ श्री कृष्ण पूजा विधि लिख्यते ॥
 आचमन ३ विधा ॥ ॥ सूर्यार्घ्य ॥ अर्घ्यादि ॥ वाक्ये ॥ अर्घ्य
 स्नान चन्दन लेख जो नाव सूर्यार्घ्य ग्रामे ॥ ॥ गार्ग्य गो
 त्र अस्मत् पूर्व पितामह वैद्येनाथ तत्पत्नि गंगोतिनाम
 निदेवी श्री नाथ शम्भो ज्ञान पराशर साद श्री
 स्थापित कृत स्म प्रथा शाक्त फल प्राप्ति पूर्व क नम
 सकल परिवार तज्ज्ञान नि सप्त जन्मोपाश्रित पाप कमे
 पततति कुान्ति गर्ज पतन व्याधि परचका नि जव

वैधव्य दो जी ग्य क लह नये निवृत्ति शाली कु यव संप्र
 राक्षेत्र मंडल यर्ष्य न्म काल वधी त्व पुत्र संतान धन धां
 न्मारे ग्य निष्क राक सकल गुणो येत रात्रा वा प्रि पूर्व
 क त उत्तर विष्णु लोक निवास कोम नमा पूर्व संकल्य
 कृत स्म प्रति वार्षिक श्री - सुप्रोत्थार्थ पंचोपचा
 र पक्षान सहित निवेदन श्री - पूजानिमित्तार्थ
 करतुं श्री सूर्यार्घ्य अर्घ्य नमः ॥ ॐ प्राकृष्टो नरजासा ॥
 पूष्य नमः ॥ गुरु नमः स्कार ॥ अखण्ड मण्डल आदि ॥

॥ आस. अर्घ्यपात्र पूजा. आत्मपूजा. ॥ ततो द्वार पूजा. ॐ बुद्धिमान्
 मः ॥ ॐ तत्त्वामासि बुद्धिरावर्धमानस्तदाशास्त्रे मत्रमानो हविर्भिः ॥
 अहे इमानो वरुणो हवो ध्रुवः ० समान आमुप्रमोषी ॥ ॐ देव
 स्यत्वा ॥ ॐ त्वमग्ने शुभिः ॥ ॐ आपो अस्मा मातरः शुचिं यन्तु
 पृतेन नो पृतयः पुनन्तु ॥ विश्वे ० हिरि प्रम्य वहनि देवी रु
 दिदा अमः शुचिरा पूत एभिः ॥ ॐ मस्य कृष्णो गृहे हविस्त्वम
 ग्नेवर्द्धया त्वंतस्मै देवा अक्षि बुवनयं च वृक्षरा स्यतिः ॥ ॐ
 मदक्रन्दप्रथमं जायमानो ऽ प्रत्सु मुदामदवा पुरीषा ॥

क्षेन स्मयद्वा हरिरास्यवा ऊ उपमृत्यं महि जात नै अर्ध
 न ॥ ॐ पशानने पशुदुरुप आक्षिप प्र सं जवे । तन्मे जज्ञसि
 प आक्षि तेन लोके लवाम्भहं ॥ ॐ स्यो ना पृथिवी नो जवान्
 कुरो निवेशनि । यथानः शर्म सुप्रथा ॥ ॐ ये ते पन्था सवितः ।
 पूर्वा सोरे रावः सुकृता अतो रिक्ता । ते निर्वो अयः पृथिवीः
 सुखे जि रक्ता च नो अधि च कु हि देव ॥ ॐ आ मि नै रि नु हरि
 नि प्री हि म मूर रो म निः मा त्वा के चि नि म म । नि रू पां सि नो ति
 धं चै व ता इ हि ॥ १० ॥

ॐ द्वारो देवीरन्मस्य विष्णोः प्रतापं दधते । अने उरु वसो धाम्ना प्रत्य
माना ॥ ॐ

25

15

10

5

0

Cms.

5

10

15

20

25



२ श्री ३ वंश गोपाल देव पूजा मायेत. ता ललाचव
 दं २ चतुंश्रम १ — अस्ता १ हाक हा म. न को
 दं २ सा ६ नै सा ३ ३ — दं २ धुपा च. धु. इता. जत
 क ३ धोति. अंगुष्ठा — मका. पु ४ जत म का माल
 दं १ पंचामृत — द्या १ आरति. चायेत प्ये
 ५ १ जोना — ल. दोमे के माल
 मा १ तुलसिमाला दं १ १ ददिरा
 ये के माल. तुलहल माला ४ स्वा माला माल

मधि दुये ग. परि. दये के तया ॥ ॥
 फं ४ पेल — कार्तिक क नवनि ॥ मधि
 फं ४ साखल — दुये ॥ ती ३ ६० जोल. मथ
 प्र १ मल च — व. थंति ॥ देवा ४ ॥ लडाव
 दुता. गे के माल ॥ दुचुं मा
 लकी ॥ ॥ सम्वत् ८६७ म
 अति तुल. पशुदि. उरी मा. श्री गोप
 वंश ॥ ल देव गुमा रु आ परि पा

Handwritten text in a cuneiform script, likely Sumerian or Akkadian, inscribed on a fragment of a clay tablet. The text is arranged in approximately six horizontal lines. The fragment is irregularly shaped, with a jagged left edge and a small notch at the top right. The script is dark and appears to be incised into the surface of the clay. The fragment is placed on a white background with a green grid for scale.

10

5

0

Cms.

5

10

15

20

25

[illegible]

यापमं एकवर्कविंशतः शतः सप्तवाहूधारी हरिः ॥ अष्टवर्षी नूतनधरः दवीनुर्यतयापमाडवत्
 यषर्गकागः गगनकगतकजः ॥ अष्टवर्षी गगनगर्गः रवीवर्कः वैवर्कलत्पुतः दक्षिणगुणवृन्दः
 वामदेवाय नमः ॥ यत्तु गदयन् नालं पूरुर्कचारुमूर्त्तमापन्नशुद्धिसमाकाशः गगन
 मध्यकूटवागे ॥ अष्टवर्षी हगवन्विष्णोः लोकानूयहृत्कारणः अष्टवर्षी सोमवेदात्मवा
 हृदवनमाहृते ॥ महापद्मवनाकृतिः ॥ देवगणकिसुतहृतिः ॥ अलक्ष्मीनायायनाय
 आनयर्थः ॥ आवाहनादिपाशाद्यावमनस्तानवन्दनाष्टगन्धानूलपनाकगप
 यमात्यादिधूपदीपने शायवालादियूनवाचमनपक्वान्मखगुडियथागकि
 मप्यनार्यदद्यात् ॥ मूर्त्तं गगत्यार्जशीलक्ष्मीनायायनोयनमः ॥ अर्चकमनसर्व ॥
 मूर्त्तं नमः ॥ अर्चिः ॥ मूर्त्तं ॥ पतिवाचपूजा ॥ मूर्त्तं हगवन्शीलक्ष्मीनायायनोय

त्रिवाराह पूजयामि श्री दहि ॥ ॐ क ग वा य ग्री स हि ताय न मः ॥ ॐ ना रा य वा
 गी श्व त्री स हि ॥ ॐ मा ध वा य को नि स हि ॥ ॐ अ वि ना य की य स हि ॥ ॐ विष्णु
 वं श कि स हि ॥ ॐ म धू त द रा य वि ह रि स हि ॥ ॐ ति वि व मा य ॐ क्रा स हि ॥ ॐ
 वा म ना य पी मि स हि ॥ ॐ श्री ध रा य त रि स हि ॥ ॐ कृष्ण क भ य मा यो स हि ॥ ॐ
 पद्म ना रा य धृ मि स हि ॥ ॐ दा मा द रा य मा हि मा स हि ॥ ॐ ति ग कि द्वा द श ना रा य
 व पू जा ॥ ॐ पू र ण मा य २० वं लक्ष्मीः स न स्व स्थे गा श्वा ये ग न ग य २० व न ग य
 य २० कृष्ण य २० ॐ जय विजयाय २॥ धान पू ॥ ॐ डा दि ॥ अश्व न्या दिः विष्कं ता दि
 भषा दिः पु ति प दा दि ॥ ग ल ग ॥ अ नू ॥ सर्व लो द वे र्था २॥ हृ द या दि ३ आ वा
 रु ना दि ॥ पू न या घ ॥ ॐ मि आ दि पू ष प य्ये कं ॥ जय ॥ १०४ : १० ॥ सार य थ ग कि ॥

अविलम्बेन

द वा गी वा द ॥ न्या स ॥ सूर्या सा कि ॥ त्रि रा व म्य ॥ ॐ ति ग्री त क्री ना रा य व पू
 जा वि धि म मा र्क ॥ ॥ ॐ त म मु ले स्व क स्य ॥ ॥ गी त म य व प स न्नी र व उ ॥

१ॐ नमः ॐ दाय ॥ ॐ नु पू जा वि धि ति ख ग ॥ क स्नान रं स्व क न ॥ ॐ अ शा दि ॥ अ स्म दि नु
 पू जा नि मि र्थ श्री सूर्या या धी न मः ॥ ॐ अ द श पू र्ण ॥ गु र न म स्का वा ॥ न्या सार्घ य प
 पू र्ण ॥ अ न म पू र्ण को ल य न ॥ द व रं स्व न हा य ॥ ॐ स्व कि न ॐ द्यो ॥ व त ॥ ॐ य द द्य क
 सि नू ल ॥ ॐ त्वं क वि ष्ट दा ॥ रु रं का ॥ ॐ य क्क्षाय वी रं ॥ स्नान ॥ ॐ या ४ रु ति नी ॥ धूप ॥
 ॐ धू त सि ॥ दी प ॥ ॐ गं क्रा सि ॥ रु त ॥ ॐ या ४ रु ति नी ॥ ने व द्य स म य क्क्षाय ॥ ॐ अ
 न प न यो ॥ त ता व दार् च नं ॥ ॐ ग त्वा या मि ॥ म र्च य १० ॥ क्षा न सा ॥ म क्षा त

साक्ष्यपूर्ण गङ्गा ॥ ॐ गङ्गा नमः ॥ ॐ नमो देवी ॥ ॐ नमो सायना ॥ ॐ नमो विष्णु
 वरुणाय ॥ ॐ नमो विष्णवे ॥ ॥ विष्णवे नमः ॥ ॐ नमो सायना ॥ ॐ नमो विष्णु
 यगज्जवाहनाय सूर्याधिपतये ॥ नमो नमः ॥ ॐ नमो सायना ॥ ॐ नमो विष्णु
 तूर्य्य ॥ हेमवर्णकीर्तिनामः ॥ गङ्गा नमः ॥ नमो नमः ॥ ॐ नमो सायना ॥ ॐ नमो विष्णु
 यक्ष्मणपूर्य्य ॥ ॐ नमो सायना ॥ ॐ नमो विष्णु ॥ ॐ नमो सायना ॥ ॐ नमो विष्णु
 नाय सूर्याधिपतये गङ्गा देवी गङ्गा नमः ॥ ॐ नमो सायना ॥ ॐ नमो विष्णु
 ॥ ॐ नमो सायना ॥ ॐ नमो विष्णु ॥ ॐ नमो सायना ॥ ॐ नमो विष्णु
 वरुण ॥ नमो नमः ॥ ॐ नमो सायना ॥ ॐ नमो विष्णु
 मुधीना सायना नमः ॥ ॐ नमो सायना ॥ ॐ नमो विष्णु

वरुण नमः ॥ नमो पूर्वदिक्पते ॥ ॐ नमो देव नमः ॥ ॐ नमो सायना
 यहा ॥ ॐ नमो सायना ॥ ॐ नमो विष्णु ॥ नमो सायना ॥ ॐ नमो विष्णु
 त. स्वान. काय नमः ॥ ॐ नमो सायना ॥ ॐ नमो विष्णु

ॐ नमः शिवाय ॥ श्राव मन ॥ ॐ नमः ॥ द व लं ख न स्ना न ॥ व तः स्ना न ॥ सु यो र्ध
ॐ अशा दि ॥ अस्म द्दी ना मायू रा ता ॥ अश्व र्यो जन ध न ल स्त्री सर्व क्त म मा ऊ ठा
शि श र्थ यी ॥ श्वा दि का द वी पू जा क र्त्तु ॥ गी मा र्त्तु ॥ न वा य न म ॥ ॐ अ क ॥
गु न न म स्तु ॥ त्या सा र्प य ॥ पू जा त म पू जा ॥ आ स न ॥ ॐ न म हि वा स ना य पा र्क
पू ज या मि ॥ ॐ न म उ क्ता स ना य ॥ पा ॥ ॐ न नि उ क्ता स ना य ॥ पा ॥ ॐ डी यी ॥ ॐ न म
ध न ग क यः पा ॥ ॐ वी ॥ क म ला ॥ अ न का ॥ र्त्तु दा ॥ न रा ॥ क ग वा ॥ क र्त्तु का ॥
हिं हा ॥ ॐ न म ॥ ॐ यै जे नि म ड्ता का ली ॥ ए ड का नी क या मि नी ॥ इ ग्गी क्ता स
अ धा री ॥ स्वा हा स्व ध न म स्तु त ॥ क ल्या तै न वि ग्ता त हा स न य नां द्वा ला त

[illegible]

श्रीमद्गणेशाय नमः ॥ तत्त्वविवेकिना द्वाविंशत्यक्षरं श्रीमद्वेदिकं
 गन्धपूषादिरुल्लेखेण तत्त्वविवेकिना द्वाविंशत्यक्षरं श्रीमद्वेदिकं
 तत्त्वविवेकिना द्वाविंशत्यक्षरं श्रीमद्वेदिकं ॥ १०८ ॥ २० ॥ तत्त्वविवेकिना
 श्रीगणेशाय नमः ॥ दक्षिणा ॥ देवांगी वीर्य ॥ तत्त्वविवेकिना ॥ धर्मात्मा विष्णुः
 देवता स्वानमस्तुल्यस्वाहः देवस्तुल्यस्वाहः देवस्तुल्यस्वाहः ॥ न्यासः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ वल्लिभयः ॥ नासियः ॥ केलिखह नकाडागने ॥ श्रीगणेशाय नमः
 पूजितासिद्धिस्तुल्यस्वाहः नवासातवत् ॥ सूर्यसाक्षिभयः ॥ भासियः ॥ स
 केनस्तुल्यस्वाहः नकाडागने ॥ तत्त्वविवेकिना ॥ धर्मात्मा विष्णुः
 पूजास्तुल्यस्वाहः ॥ ० ॥